दीन होए के चलसी, दरदी रसूल रेहेमान।
बोहोत कह्या है रसूलें, ताकी नेक करी है बयान।।५१ ।।

जो खुदा का दर्द गरीबी से लेकर चलेगा उनके वास्ते रसूल साहब ने बहुत कुछ कहा है। मैंने थोड़ा सा यहां इशारा किया है।

ए तो जाहेर की कही, अब गुझ कहूंगी तुम।
जो बयान रसूलें न किए, मोमिन वतन खसम।।५२ ।।

अब तक तुम्हें जाहिर की बातें कही हैं। अब रहस्य की बातें बताती हूं। इसका बयान रसूल साहब ने नहीं किया है। अपने घर और अपने धनी की बातें गुझ हैं। वह अब मैं बताती हूं।

गुझ माएने कौन लेवहीं, जो जाहेर लिए न जाए।
ए सब खोले रसूलें, जो मैं दिए बताए।।५३ ।।

जब जाहिरी बातों पर ही नहीं चला जाता, तो रहस्य वाली (गुझ) बातों पर कौन अमल करेगा, यह रसूल साहब ने लिखा है और मैंने तुमको बताया है।

कोई जाहेर न ले सके, तो गुझ होसी किन पर।
हम जो लिए जाहेर, नेक ए भी सुनो खबर।।५४ ।।

जो जाहिरी अर्थ नहीं समझ सका वह गुझ रहस्य के अर्थ कैसे समझेगा? हमने जो जाहिरी अर्थ लिए हैं उनकी भी थोड़ी पहचान सुनो।

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। ६१९ ।।

सनन्ध–अर्स अरवाहों के लछन

गुझ तो तुमको कहूंगी, सक न राखूं किन।
पर पेहेले कहूं नेक मोमिनों, जो हमारा चलन।।१ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि रहस्य की बातें तो तुमको कहूंगी और तुम्हारे संशय भी मिटाऊंगी, परन्तु पहले मोमिनों की बात करती हूं जो हमारी रहनी हैं।

बयान किए जो रसूलें, हम सोई लिए जाहेर।
लाख बेर कह्या रसूलें, जन जनसों लर लर।।२ ।।

रसूल साहब ने जो कुरान में कहा है उसे हमने जाहिरी (बाह्य अर्थ) में ग्रहण किया। रसूल साहब ने लोगों को लाखों बार लड़-लड़कर कहा।

कोट बेर जाहेर सबों, रसूलें फुरमाया जेह।
सो कलमा सिर लेए के, पांउ भरे हम एह।।३ ।।

रसूल साहब ने जो करोड़ों बार फरमाया था, उस कलमे को सिर पर धारण करके हमने अपनी रहनी बनाई।

बड़ा जाहेर ए माएना, कहे हक पें ल्याया फुरमान।
इन कलमे की दोस्ती, कह्या मिलसी रेहेमान।।४ ।।

रसूल साहब ने कहा कि यह कलमा (तारतम) बहुत बड़ी बात है। खुदा ने फरमान देकर मुझे भेजा है। इस कलमे (तारतम) को धारण करने से ही रहमान (धनी) मिलेंगे।

Nijanand App

खातिर तुम अर्स मोमिन, मैं ल्याया हक फुरमान।
कौल करत हों तेहेकीक, इत ल्याऊं बुलाए सुभान।।५।।

हे मोमिन! तुम्हारे लिए मैं परवरदिगार से कुरान लेकर आया हूं और कसम खाकर कहता हूं कि उस सुभान (धाम-धनी) को मैं लेकर आऊंगा।

जो किनहूं पाया नहीं, ना कछू सुनिया कान।
तिनका जामिन होए के, मैं इत मिलाऊं आन।।६।।

जिस पारब्रह्म को आज तक किसी ने वाणी से नहीं सुना और न उसको पाया है, उस पारब्रह्म को मैं यहां लाकर मिलाऊंगा। इसकी मैं जमानत देता हूं।

अब रूहें जो अर्स मोमिन, तिन कहा चाहियत है और।
रसूल कहे जानो हक, काजी कजा होसी इन ठौर।।७।।

अर्श के रूह मोमिनों को इससे ज्यादा और क्या चाहिए? रसूल साहब कहते हैं कि हक को पहचान लो। वही कजा के दिन काजी (न्यायाधीश) बनकर बैठेगा।

जाहेर हक देखाइया, हम लिए माएने ए।
एही कलमा रसूल का, हम सिर चढ़ाया ले।।८।।

रसूल साहब ने हमें कलमे से (तारतम से) हक की पहचान करा दी, इसीलिए हमने रसूल साहब के कलमे को सिर पर धारण किया है।

जाहेर दुलहा छोड़ के, ढूंढ़त माएने गुझ।
ए खोज तिनों की देख के, होत अचम्भा मुझ।।९।।

सामने बैठे प्राणनाथ को न पहचान कर ग्रन्थों के गुझ माएनों से उसे ढूंढ़ते हो, जो अब भी खोज रहे हैं, उनको देखकर मुझे हैरानी होती है।

हम याही फुरमान के, लिए माएने जाहेर।
रूह बांधी रसूल सों, जिन हक की कही खबर।।१०।।

हमने इस कुरान के जाहिरी अर्थ लिए और उस रसूल से सुरता बांधी जिन्होंने मात्र खबर कही है।

हाथ पकड़ देखावहीं, आप आए दरम्यान।
ए छोड़ और जो ढूंढ़हीं, तिन दिल आंख न कान।।११।।

अब रसूल साहब ने आकर खुद बताया है। यह प्राणनाथ जी हैं। यह हाथ पकड़कर दिखा रहे हैं कि यही पारब्रह्म है। इनको छोड़कर जो और को ढूंढ़ते फिरते हैं उनके दिल, आंख और कान नहीं हैं, अर्थात् उन्होंने कभी भी पारब्रह्म की पहचान की वाणी नहीं सुनी और न ही दिल में भाव हैं कि उनके आने पर दर्शन कर सकें।

मोमिन थे सो समझे, ए तो सीधा कह्या महंमद।
ना मैं जिमी आसमान का, खबर जो ल्याया खुद।।१२।।

मुहम्मद ने स्पष्ट कहा कि मैं न जमीन का हूं, न आसमान का हूं। मैं स्वयं अल्लाह की खबर लेकर आया हूं। जो मोमिन थे उन्होंने इस बात को समझ लिया।

Nijanand App

और माएने सो ढूंढ़हीं, ठौर न जाको दिल।
रसूल रहीम मिलावहीं, और ढूंढ़े कहा बे अकल।। १३ ।।

जिनके अन्दर यकीन नहीं है वह इधर-उधर ढूंढ रहे हैं। जब रसूल ने जमानत दी है कि मैं खुदा से मिलाऊंगा, फिर जो इधर-उधर ढूंढ़ते हैं वह बेअक्ल हैं।

हम तो एही हक किया, जाहेर रसूल बोल।
ए छोड़ और न देखहीं, हम एही लिया सिर कौल।। १४ ।।

हमने तो रसूल साहब के इन वचनों को ही सत (सत्य) मानकर ग्रहण कर लिया। इसको छोड़कर हम और कहीं नहीं खोजते।

एही हमारा आकीन, हम लिया हक कर।
आकीन कह्या रसूल का, सब देखावे नजर।। १५ ।।

इसी को सच्चा मानकर हमने स्वीकार किया। रसूल साहब ने जिस यकीन के लिए कहा वह हम तुमको नजर में दिखाते हैं।

देखाया रसूल ने, सो लीजो आप चेतन।
अंकूर अपना देखिए, ज्यों याद आवे वतन।। १६ ।।

हे मोमिनो! रसूल साहब ने जो रास्ता दिखाया है उसको चित्त में धारण कर लेना और अपनी निसबत को देखना जिससे अपने घर (परमधाम) की याद आए।

जिन खातिर ए रसूल, ले आया फुरमान।
हम ले आकीन चले जिन बिध, नेक ए भी करूं बयान।। १७ ।।

जिनके वास्ते रसूल साहब फरमान लेकर आए हैं तथा हम भी जिस यकीन पर चल रहे हैं, थोड़ा-सा उसका बयान करती हूं।

अर्स अरवाहें मेरी बोहोत हैं, नेक तिनके कहूं लछन।
वतन हक आप भूलियां, तो भी मोमिन एही चलन।। १८ ।।

मेरी परमधाम की बहुत ऐसी रूहें हैं जो अपने घर और हक (धाम-धनी) को भूल बैठी हैं। फिर भी उनकी रहनी कैसी होगी, उसके लक्षणों को मैं थोड़ा बताती हूं।

अर्स अजीम की जो रूहें, तिनकी ए पेहेचान।
जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान।। १९ ।।

अर्श अजीम (परमधाम) के मोमिनों की पहचान यह है कि वतन को भूलने पर भी उनका यकीन वहीं पर रहता है।

आसिक खुद खसम की, कोई प्रेम कहो विरहिन।
ताए कोई दरदन कहो, ए बिध अर्स रूहन।। २० ।।

यह रूहें पारब्रह्म की खास आशिक हैं इन्हें कोई प्रेमी कहो, विरहिन कहो, दर्दी कहो इस तरह की रूहों की पहचान है।

रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन।
पर हकें पकड़ी अंतर, ना तो रहे ना तन।। २१ ।।

धाम-धनी की अंगनाएं अपने मूल तन के बिना नहीं रह सकतीं। श्री राजजी महाराज ने अपना बल दे रखा है, नहीं तो यह अपना तन ही छोड़ देतीं।

Nijanand App

ऊपर काहूं न देखावहीं, जो दम न ले सके खिन।
सो आसिक जाने मासूक की, एही मोमिन विरहिन।। २२ ।।

विरहिणी मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) ऊपर का दिखावा नहीं करती तथा अपना एक क्षण भी बरबाद नहीं करती। इसको पारब्रह्म जानते हैं या मोमिन जानते हैं। इसी को विरहिणी मोमिन कहते हैं।

मोमिन आकीन न छूटहीं, जो पड़े अनेक विघन।
आसिक मासूक वास्ते, जीव को न करे जतन।। २३ ।।

कितने भी संकट आएं मोमिन अपना यकीन नहीं छोड़ते। यह मोमिन अपने माशूक (धनी) के वास्ते जीव तक की कुर्बानी देने में पीछे नहीं हटते।

रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन।
साफ दिल रूह मोमिन, कबहूं न दुखावे किन।। २४ ।।

यह निर्गुण (साधारण) होकर रहते हैं और निर्गुण (सात्विक) ही खाते हैं। मोमिन के दिल साफ रहते हैं। यह किसी को दुखाते नहीं।

मोमिन खोजे आप को, और खोजे कहां है घर।
खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखिर।। २५ ।।

मोमिन वही हैं जो अपने आप की पहचान करते हैं, अपने घर की खोज करते हैं, अपने धनी की खोज करते हैं और आखिरत के दिन की खोज में रहते हैं।

खोज मोमिन न थके, जोलों पार के पारै पार।
नित खोजे चरनी चढ़ें, नए नए करे विचार।। २६ ।।

मोमिन खोज करने में तब तक नहीं थकते जब तक उन्हें हद पार बेहद, बेहद पार (अक्षर), अक्षर पार अपना घर नहीं मिल जाता। वह खुद ही आगे की खोजकर नए विचार करके सीढ़ी चढ़ते हैं।

खोज खोज और खोजहीं, आद के आद अनाद।
पल पल नूर बढ़ता, श्रवनों एही स्वाद।। २७ ।।

मोमिन लगातार आदि के बनाने वाले अनादि (अक्षरातीत) को खोजते हैं, उनका ज्ञान बढ़ता है और सुनने में वाणी का स्वाद आता है।

फुरमान हाथों न छूटहीं, जोलों पाइए हक वतन।
मासूक वतन पाए बिना, दरद न जाए निसदिन।। २८ ।।

जब तक हक और वतन नहीं मिल जाता तब तक उनके हाथ से कुरान छूटता नहीं। श्री राजजी महाराज और घर को पाए बिना दिन-रात उनका दर्द नहीं मिटता।

मोमिन अंदर उजले, खिन खिन बढ़त उजास।
देह भरोसा ना करें, इमाम मिलन की आस।। २९ ।।

मोमिनों का दिल साफ होता है। इनमें पल-पल ज्ञान की रोशनी बढ़ती है। इमाम मेंहदी से मिलने की आशा लगी रहती है। वह तन का भी विश्वास नहीं करते।

ज्यों ज्यों माएने विचारहीं, त्यों बेधे सकल संधान।
रोम रोम ताए बेधहीं, सब्द रसूल के बान।। ३० ।।

ज्यों-ज्यों वाणी का अध्ययन करते हैं त्यों-त्यों उनके अन्दर चोट लगती है तथा रसूल साहब की वाणी रोम-रोम में चुभती है।

Nijanand App

मोमिन अंग कोमल, ताए बान निकसें फूट।
गलित गात सब भीगल, सब अंगों टूक टूक।। ३१ ।।

मोमिनों के अंग कोमल हैं। दिल में वाणी के वचन बाण की तरह लगते हैं। फिर उसमें सराबोर (डूबकर) होकर धनी पर फिदा हो जाते हैं।

खिन खेलें खिन में हंसें, खिन में गावें गीत।
खिन रोवें सुध ना रहे, एही मोमिन की रीत।। ३२ ।।

मोमिन वाणी की लज्जत से पल में हंसते हैं, पल में गाते हैं, पल में रोते हैं, पल में खेलते हैं। सुध उनको रहती नहीं। यह ही उनकी रीति है (रहनी है)।

हक बातें खेलें हंसें, और गीत पिया के गाए।
रोवें उरझे पिउ की, और बातनसों मुरछाए।। ३३ ।।

हक की बातें जब वाणी में पढ़ते हैं तो खेलते हैं, हंसते हैं और धनी के गीत भी गाते हैं। उसकी वाणी से धनी से झगड़ते हैं, रोते हैं, बातें करते हैं और कभी मूर्छित भी हो जाते हैं।

मोमिन दरदा ना सहे, जब जाहेर हुए पिउ।
मोमिन अंग पिउ का, पिउ मोमिन अंग जिउ।। ३४ ।।

जब धनी वाणी से जाहिर (प्रगट) हो जाते हैं तो मोमिन का दर्द सहन नहीं करते। मोमिन ही धनी के अंग हैं और मोमिनों का जीव धनी का अंग है।

जोलों सुध ना मासूक की, मोमिन अंग में पिउ।
जब मासूक जाहेर हुए, आसिक ले खड़ी अंग जिउ।। ३५ ।।

जब तक माशूक की खबर नहीं है तभी तक धनी अंग में छिपे हैं। जब धनी जाहिर हो गए तो मोमिन अपने जीव में धनी को लेकर खड़े हो जाते हैं।

बोहोत निसानी और हैं, अर्स अरवा मोमिन।
सो इन जुबां केते कहूं, मेरे वतनी के लछन।। ३६ ।।

अर्श के मोमिनों की और भी बड़ी निशानियां हैं। इनका मैं जबान से कैसे वर्णन करूं? यह मेरे वतनी की रहनी है।

जो होवे अर्स अजीम की, सो निरखो अपने निसान।
ए लछन मोमिन वतनी, सो देखो दिल में आन।। ३७ ।।

जो मोमिन अर्श अजीम (परमधाम) के हों वह अपनी रहनी को देखें और परखें। मोमिनों के लछन (लक्षण) मैंने कहे हैं। उनको दिल में विचार कर देखो।

मोमिन रूहें अर्स की, ए समझ लीजो तुम दिल।
ठौर ठौर से आए मोमिन, सुख लेसी सब मिल।। ३८ ।।

हे अर्श की रूह मोमिनो! तुम यह बात दिल में समझ लेना। मोमिन (सुन्दरसाथ) यहां जुदी-जुदी जगहों से आए हैं और सब इकट्ठे मिलकर सुख लेंगे।

ऐ केहेती हों मोमिन को, जिन अर्स बका में तन।
सो कैसे ढांपी रहें, सुन के एह वचन।। ३९ ।।

जिन मोमिनों के मूल तन परमधाम में हैं उनके लिए ही मैं कहती हूं। इन वचनों को सुनकर वह छिपे नहीं रहेंगे।

Nijanand App

ए सब्द सुन मोमिन, रेहे न सकें पल।
तामें मूल अंकूर को, रहे न पकरयो बल।। ४० ।।

इन वचनों को सुनकर मोमिन एक पल के लिए पीछे नहीं रह सकते। इनके अन्दर मूल का अंकुर (निसबत) है। दुनियां की कोई ताकत इन्हें रोक नहीं सकती।

जब साहेब की सुध सुनी, तब जाए न रह्यो रूहन।
ओ ख्वाबी दम भी न रहें, तो क्यों रहें अर्स मोमिन।। ४१ ।।

अपने मालिक की खबर सुन संसार के जीव भी पीछे नहीं रहते तो अर्श के मोमिन धनी की खबर सुनकर पीछे कैसे रह सकते हैं?

मोमिन पाए कदम हादी के, खोल द्वार लिए हजूर।
पट खोल दिया फुरमान का, पल पल बरसत नूर।। ४२ ।।

मोमिनों को स्वयं धनी ने पार के दरवाजे खोलकर अपने चरणों में ले लिया है। जिससे कुरान के सारे भेद खुल गए हैं और उनकी मेहर पल-पल बरस रही है।

खाना पीना दीदार, रोजा निमाज दीदार।
एक दोस्ती जानें हक की, दुनी सब करी मुरदार।। ४३ ।।

मोमिनों का खाना-पीना श्री राजजी के दर्शन है। रोजा, नमाज भी दर्शन है, मोमिन केवल हक की दोस्ती जानते हैं। बाकी दुनियां को मुरदार (मरा हुआ, जड़) समझकर छोड़ देते हैं।

केतेक ठौर हैं मोमिन, तिन सब ठौरों है उजास।
पर इतथें नूर पसरया, तब ओ ले उठसी प्रकास।। ४४ ।।

जिस-जिस जगह पर सुन्दरसाथ हैं उन सब जगहों पर वाणी का प्रकाश है। जब यहां (श्री पन्नाजी) से वाणी फैलेगी तो सोई हुई आत्माएं जागृत हो जाएंगी।

कोई दिन हम छिपे रहे, सो भी मोमिनों के सुख काज।
जो होवें नेक जाहेर, तो रहे न पकरयो अवाज।। ४५ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि आज दिन तक हम मोमिनों के सुख के वास्ते (ताकि वह खेल देखें) छिपे रहे। यदि हम थोड़ी-सी भी खबर जाहिर होने देते तो मेरी आवाज फैल जाती और पकड़ में न रहती अर्थात् दुनियां समझ जाती।

मैं नूर अंग इमाम का, खासी रूह खसम।
सुख देऊं जगाए के, मोमिन रूहें तले कदम।। ४६ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मैं इमाम (प्राणनाथ) का स्वरूप हूं। इमाम मेंहदी की अंगना हूं। मैं सब रूहों को जगाकर श्री राजजी के चरणों में पहुंचा दूंगी।

रूहों को अर्स देखावने, उलसत मेरे अंग।
करने बात मासूक की, मावत नहीं उमंग।। ४७ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मोमिनों को परमधाम दिखाने के लिए मेरा रोम-रोम खुशी से भरा है। मुझे मोमिनों से श्री राजजी की बातें करने के लिए अंग में उमंग समाती नहीं है।

Nijanand App

नए नए रंग रूह मोमिन, आवत हैं सिरदार।
बड़ो सुख होसी कयामत, नहीं इन सुख को पार।।४८।।

नए-नए रंगों के साथ में हमारे सिरदार (जागनी करने वाले) मोमिन आते हैं। आखिरत के समय में इनको बहुत सुख होगा। उन सुखों की गिनती नहीं हो सकती।

आसिक आवत मासूक की, ताको छिपो राखों उजास।
राह देखों और रूहन की, सब मिल होसी विलास।।४९।।

जो रूहें वाणी के द्वारा जागृत होकर आएंगी, उनके जाहिर होने की बात मैंने छुपा रखी है, ताकि तब तक और सब भी आ जाएं। फिर सब मिलकर आनन्द करेंगे।

नूर इमाम इन भांत का, कबूं जो निकसी किरन।
तो पसरसी एक पल में, चारों तरफों सब धरन।।५०।।

इमाम के ज्ञान की एक किरण भी जब निकलेगी तो चौथाई पल के अन्दर उसका तेज इस ब्रह्माण्ड में चारों तरफ फैल जाएगा।

क्यों रहे प्रकास पकरयो, इमाम नूर अति जोर।
मैं राखत हों ले हुकम, न तो गई रैन भयो भोर।।५१।।

श्री प्राणनाथजी की वाणी का तेज इतना अधिक है जिसे पकड़ा नहीं जा सकता। मैंने भी उनके हुक्म से ही उसे पकड़ रखा है, नहीं तो कभी का अन्धकार मिटकर सवेरा हो जाता।

नूर बड़ो इमाम को, सो क्यों ढांपूं मैं अब।
सुख लेने को या बखत, पीछे दुनी मिलसी सब।।५२।।

इमाम के नूर (वाणी) को मैंने इसलिए ढांप रखा है कि पहले मोमिन इसका सुख ले लें। पीछे तो सब दुनियां को सुख मिलना ही है।

मैं तुमको चेतन करूं, एही कसौटी तुम।
या बिध अर्स अरवांहों का, तसीहा लेवें खसम।।५३।।

मैं तुम्हें सावधान कर रही हूं, कि तुम इस पर यकीन लेकर खड़े हो जाओ, यही तुम्हारी कसौटी है। तुम अर्श की रूहों की परीक्षा धनी ले रहे हैं।

सबद हमारे सुन के, उठी ना अंग मरोर।
आसिक मासूक सब देखहीं, तुम इस्क का जोर।।५४।।

हमारे वचनों को (वाणी को) सुनकर जो भी रूह चुस्ती के साथ नहीं उठी तो समझना कि तुम्हारे इश्क की परीक्षा, श्री राजजी के सामने हुई है, अर्थात् तुम फेल (असफल) हो गए।

ए सुन के दौड़ी नहीं, तो हांसी है तिन पर।
जैसा इस्क जिनपें, सो अब होसी जाहेर।।५५।।

इन वचनों को सुनकर जो दौड़कर नहीं आंई तो उस पर हांसी (हंसी) होगी। कौन श्री राजजी से कितना प्यार करती है, वह अब जाहिर हो जाएगा।

जो इस्क ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार।
दरद बिना दुख होएसी, सो जानो निरधार।।५६।।

जो रूह यहां इश्क लेकर अपने प्राणनाथ से मिलेगी, उसे अपार सुख होगा और जिन रूहों को धनी के लिए दर्द उत्पन्न नहीं होगा, उन्हें अपार दुःख होगा। यह बात निश्चित जानो।

Nijanand App

जो किने गफलत करी, जागी नहीं दिल दे।
सो इत दीन दुनी का, कछू ना लाहा ले।।५७ ।।

जिसने यहां पर लापरवाही की और अपने धनी की पहचान नहीं की तो वह यहां दीन का या दुनियां का कोई भी सुख नहीं ले सकती, अर्थात् धनी की वाणी लेकर धनी पर फिदा होना तथा सुन्दरसाथ की सेवा का सुख नहीं पाएगी।

लाहा तो ना लेवही, पर सामी हांसी होए।
ए हांसी अर्स के मोमिन, जिन कराओ कोए।।५८ ।।

संसार में तो लाभ मिलना नहीं और दूसरा घर में जाकर हंसी भी होगी, इसलिए हे मोमिनो! घर में जाकर हंसी मत कराना। यहां सावधान हो जाओ।

जिन उपजे मोमिन को, इन हांसी का भी दुख।
सो दुख बुरा रूहन को, जो याद आवे मिने सुख।।५९ ।।

मोमिनों को इस हांसी (हंसी) का भी दुःख न हो, क्योंकि यह बहुत बुरा दुःख है जो सुख में दुःख की याद अखण्ड कर देगा।

ना तो जिन जुबां में दुख कहूं, सो ए करूं सत टूक।
तो एता रूहों खातिर, बिध बिध करतहों कूक।।६० ।।

नहीं तो जिस जबान से मैं रूहों के दुःख की बात करती हूं, उस जबान के टुकड़े-टुकड़े कर दूं। यह तो मैंने रूह की भलाई के वास्ते तरह-तरह की आवाज में (बोली में) कहा है।

जब दुख मेरी रूहन को, तब सुख कैसा मोहे।
हम तुम अर्स अजीम के, अपने रूह नहीं दोए।।६१ ।।

यदि मेरी रूहों को दुःख होता तो मुझे सुख कैसे हो सकता है? हम तुम दोनों ही अर्श (परमधाम) के हैं। जहां वाहेदत है (एक-दिली है), अपनी रूह जुदा-जुदा नहीं है।

पेहेले फरेब देखाइया, पीछे महंमद दीन।
कलमा जाहेर करके, देखाया आकीन।।६२ ।।

पहले फरेब (झूठा खेल) का खेल दिखाया। पीछे घर की पहचान करवाई। फिर कलमा (तारतम) जाहिर करके हमें हमारे यकीन की पहचान कराई।

माएने जाहेर कुरान के, कही बात नेक सोए।
और गुझ भी करों जाहेर, अर्स वतनी जो कोए।।६३ ।।

कुरान के रहस्यों को (गुझ बातों को) थोड़ा-सा हमने अभी बताया है। और भी छिपे भेद अर्श के मोमिनों के वास्ते जाहिर करती हूं।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ६८२ ।।

सनन्ध–दिल मोमिन अर्स सुभान की

दिल हकीकी रूहें अर्स की, जामें आप आसिक हुआ सुलतान।
तो कही गिरो ए रबानी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।१ ।।

रूहों के दिल में श्री राजजी महाराज आशिक होकर स्वयं बैठे हैं, इसलिए खुदा की इस जमात के दिलों को खुदा का घर कहा है।

Nijanand App